

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गीता के महत्व की विवेचना

डॉ० राज्यश्री मिश्रा

एसोसिएट प्रोफेसर

संस्कृत महात्मा गांधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कालेज फिरोजाबाद

सार

श्रीमद्भगवद्गीता, भारतीय दर्शन और संस्कृति का एक अनुपम रत्न है। महाभारत के युद्धक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया यह उपदेश, मात्र एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू को स्पर्श करने वाला एक शाश्वत ज्ञानकोश है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, जब मनुष्य अनेक जटिल समस्याओं, तनावों और अनिश्चितताओं से घिरा हुआ है, तो गीता का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास और शांति का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि सामाजिक और वैश्विक संदर्भों में भी प्रासंगिक बनी हुई है। आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है तनाव और मानसिक अशांति। प्रतिस्पर्धा, भागदौड़ भरी जीवनशैली और भविष्य की अनिश्चितता ने मनुष्य को भीतर से खोखला कर दिया है। गीता का कर्मयोग का सिद्धांत इस स्थिति में एक शक्तिशाली उपाय प्रस्तुत करता है। यह सिखाता है कि फल की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करना ही सच्चा कर्म है। जब हम आसक्ति और अपेक्षाओं से मुक्त होकर कर्म करते हैं, तो तनाव और निराशा स्वतः ही कम हो जाते हैं। गीता का समत्व योग सुख-दुख, लाभ-हानि को समान भाव से देखने की शिक्षा देता है, जिससे मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है नैतिकता और मूल्यों का क्षरण। आज के भौतिकवादी युग में, व्यक्तिवादी सोच और उपभोक्तावाद हावी हो रहे हैं, जिससे नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। गीता में धर्म की व्यापक व्याख्या की गई है, जो केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि कर्तव्य, न्याय और सत्य पर आधारित जीवन जीने का मार्ग दिखाती है। यह हमें सिखाती है कि स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करना ही सच्चा धर्म है। गीता के विभिन्न अध्यायों में सत्य, अहिंसा, करुणा और त्याग जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर दिया गया है, जो आज भी समाज को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य शब्द

भारतीय, दर्शन, संस्कृति, त्याग

भूमिका

गीता कर्म योग के महत्व पर बल देती है। यह सिखाती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने निर्धारित कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। जब हम अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं, तो हमारा मन नकारात्मक विचारों और चिंताओं से दूर रहता है। कर्म योग हमें वर्तमान क्षण में जीने और अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की शिक्षा देता है, जो तनाव को कम करने का एक प्रभावी तरीका है। उल्लेखित है : कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि [1]

भक्ति योग, गीता का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है, जो मानसिक शांति प्राप्त करने में सहायक है। भगवान के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव मन को शांति और संतोष प्रदान करता है। नियमित प्रार्थना, ध्यान और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन मन को शांत और स्थिर करने में मदद करता है। भक्ति योग हमें यह अनुभव कराता है कि हम अकेले नहीं हैं और एक दिव्य शक्ति हमेशा हमारे साथ है, जो हमें मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। श्रीकृष्ण कहते हैं: सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः [2]

ज्ञान योग, आत्म-ज्ञान और सत्य की खोज पर केंद्रित है। गीता हमें अपने वास्तविक स्वरूप को जानने और शरीर, मन और बुद्धि से परे आत्मा की अमरता को समझने का आह्वान करती है। जब हम यह जान लेते हैं कि हम नश्वर शरीर नहीं बल्कि अविनाशी आत्मा हैं, तो जीवन की क्षणभंगुर परेशानियां हमें अधिक विचलित नहीं कर पाती हैं। आत्म-ज्ञान हमें जीवन के प्रति एक व्यापक और अधिक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है।

आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने मनुष्य को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं, लेकिन इसने अस्तित्वगत प्रश्नों को भी जन्म दिया है। 'मैं कौन हूँ?', 'जीवन का उद्देश्य क्या है?' जैसे प्रश्न आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। गीता का ज्ञानयोग इन प्रश्नों का उत्तर देने में सहायक है। यह आत्मा, परमात्मा और जगत के स्वरूप का ज्ञान कराती है और हमें अपनी वास्तविक पहचान को समझने की प्रेरणा देती है। गीता का यह दार्शनिक चिंतन हमें क्षणभंगुर भौतिक सुखों से परे शाश्वत आनंद की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

इसके अतिरिक्त, गीता नेतृत्व और प्रबंधन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। भगवान

श्रीकृष्ण एक कुशल मार्गदर्शक और रणनीतिकार के रूप में अर्जुन का मार्गदर्शन करते हैं। उनके उपदेशों में निर्णय लेने की क्षमता, टीम प्रबंधन, और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने जैसे महत्वपूर्ण गुण निहित हैं। आधुनिक नेता और प्रबंधक गीता के सिद्धांतों को अपनाकर अधिक प्रभावी और नैतिक नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं।

वैश्विक स्तर पर, गीता शांति और सद्भाव की स्थापना में भी योगदान दे सकती है। इसका सार्वभौमिक दृष्टिकोण और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान का भाव विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा दे सकता है। गीता का यह संदेश कि सभी जीव एक ही परम सत्ता का अंश हैं, हमें वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करने की प्रेरणा देता है।

आज के आधुनिक युग में, तनाव और मानसिक अशांति एक आम समस्या बन गई है। जीवन की आपाधापी, प्रतिस्पर्धा, अनिश्चितता और भौतिकवादी आकांक्षाओं के बोझ तले व्यक्ति अक्सर अशांति और तनावग्रस्त महसूस करता है। ऐसे समय में, भारतीय संस्कृति के महान ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता एक अमूल्य मार्गदर्शक के रूप में सामने आती है। यह न केवल एक धार्मिक पाठ है, बल्कि जीवन के गहन दर्शन और व्यावहारिक ज्ञान का भंडार है, जो तनाव और मानसिक अशांति से मुक्ति पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

साहित्य की समीक्षा

गीता, महाभारत के युद्ध के मैदान में भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेशों का संग्रह है। युद्ध की भयावहता और अपने ही बंधु-बंधवों के विरुद्ध लड़ने के कर्तव्य के द्वंद्व में फँसे अर्जुन को कृष्ण ने आत्म-ज्ञान, कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग के माध्यम से जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शांति के मार्ग का बोध कराया। गीता के ये शाश्वत सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे।

तनाव और मानसिक अशांति के मूल कारणों को समझने में गीता हमारी मदद करती है। यह सिखाती है कि दुख और अशांति का मुख्य कारण आसक्ति और मोह है। हम वस्तुओं, रिश्तों और परिणामों से अत्यधिक जुड़ जाते हैं, जिससे उनकी हानि या प्रतिकूलता हमें अत्यधिक पीड़ा पहुँचाती है।

गीता अनासक्ति के भाव को अपनाने का उपदेश देती है, जिसका अर्थ है कर्मों के फल की चिंता किए

बिना कर्तव्य का पालन करना। जब हम अपने कर्मों के परिणामों से मुक्त हो जाते हैं, तो चिंता और तनाव स्वतः ही कम हो जाते हैं।

गीता में ध्यान और योग के महत्व को भी दर्शाया गया है। अर्जुन को कृष्ण द्वारा सिखाए गए विभिन्न प्रकार के योग आसन और ध्यान की तकनीकें मन को शांत करने, एकाग्रता बढ़ाने और आंतरिक शांति प्राप्त करने में सहायक होती हैं। नियमित योगाभ्यास और ध्यान मानसिक तनाव को कम करने और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने का एक शक्तिशाली साधन है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गीता के महत्व की विवेचना

श्रीमद्भगवद्गीता तनाव और मानसिक अशांति से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए एक अद्वितीय मार्गदर्शक है। यह हमें आसक्ति त्यागने, कर्तव्यनिष्ठ रहने, ईश्वर के प्रति समर्पित होने और आत्म-ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग दिखाती है। गीता के शाश्वत सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाकर हम न केवल तनाव और अशांति से मुक्ति पा सकते हैं, बल्कि एक शांत, स्थिर और उद्देश्यपूर्ण जीवन भी जी सकते हैं। आज के भागदौड़ भरे जीवन में, गीता का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह हमें आंतरिक शांति और संतुलन प्राप्त करने का एक व्यावहारिक और शाश्वत मार्ग प्रदान करती है।

आज के युग में, हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जहाँ नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का तेजी से क्षरण हो रहा है। व्यक्तिगत स्वार्थ, भौतिकवादी आकांक्षाएं, और सामाजिक असंवेदनशीलता बढ़ती जा रही है। परिवार, समुदाय और राष्ट्र के स्तर पर, सत्य, न्याय, करुणा, और त्याग जैसे शाश्वत मूल्यों का महत्व कम होता दिख रहा है। इस चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में, भारतीय संस्कृति के महानतम ग्रंथों में से एक, श्रीमद्भगवद्गीता, एक अमूल्य मार्गदर्शक के रूप में सामने आती है। गीता न केवल हमें नैतिक और आध्यात्मिक संकटों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है, बल्कि जीवन के सही उद्देश्य और मूल्यों को समझने में भी सहायता करती है।

नैतिकता का क्षरण कई रूपों में प्रकट हो रहा है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, हिंसा, और पर्यावरण का विनाश आज आम समस्याएं बन गई हैं। रिश्तों में विश्वास की कमी, दूसरों के प्रति असम्मान, और केवल अपने लाभ के बारे में सोचने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन और कानूनों का अनादर भी चिंताजनक स्तर पर पहुँच गया है। इस नैतिक पतन के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें

शिक्षा प्रणाली में मूल्यों की कमी, पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण, और सामाजिक और आर्थिक असमानता प्रमुख हैं। मीडिया और इंटरनेट भी कई बार नकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं।

इस अंधकारमय परिदृश्य में, श्रीमद्भगवद्गीता एक प्रकाश स्तंभ की तरह है। यह न केवल अर्जुन के युद्धक्षेत्र में खड़े होकर अपने कर्तव्य के प्रति संशय को दूर करने के लिए भगवान कृष्ण द्वारा दिया गया ज्ञान है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू पर लागू होने वाले सार्वभौमिक सिद्धांतों का भंडार है। गीता हमें धर्म (कर्तव्य), कर्म (कर्म), और मोक्ष (मुक्ति) के गहन रहस्यों से अवगत कराती है।

गीता का सबसे महत्वपूर्ण संदेश निष्काम कर्म का सिद्धांत है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन फल की आसक्ति के बिना करना चाहिए। जब हम अपने कर्मों को केवल कर्तव्य भावना से करते हैं, तो हम अहंकार और स्वार्थ से मुक्त हो जाते हैं, जो नैतिक पतन के मुख्य कारण हैं। गीता हमें यह भी सिखाती है कि हर कर्म का अपना महत्व है और हमें अपने सामाजिक और व्यक्तिगत दायित्वों को ईमानदारी और निष्ठा से निभाना चाहिए। कहा भी गया है: नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः [3]

गीता में सत्य, अहिंसा, क्षमा, धैर्य, और दान जैसे नैतिक मूल्यों पर विशेष जोर दिया गया है। भगवान कृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि सच्चा ज्ञान वही है जो हमें इन गुणों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित करे। गीता हमें सिखाती है कि बाहरी परिस्थितियों चाहे कैसी भी हों, हमें अपने आंतरिक संतुलन और नैतिक मूल्यों को बनाए रखना चाहिए। सुख और दुख, लाभ और हानि को समान भाव से स्वीकार करने का संदेश हमें मानसिक शांति और नैतिक दृढ़ता प्रदान करता है।

गीता का महत्व केवल सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। यह हमें सिखाती है कि कैसे अपने मन को नियंत्रित करें, अपनी इंद्रियों को वश में रखें, और आसक्ति से मुक्त रहें। ध्यान, योग, और भक्ति के माध्यम से, हम अपने भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सकते हैं और नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर कर सकते हैं।

आज के नैतिक संकट के समय में, गीता का अध्ययन और उसके सिद्धांतों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल व्यक्तियों को नैतिक रूप से मजबूत बनाएगा, बल्कि एक स्वस्थ और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में भी सहायक होगा। परिवारों में गीता के मूल्यों को बच्चों को सिखाना चाहिए, और शिक्षा प्रणाली में इसे उचित स्थान मिलना चाहिए। सामाजिक और राजनीतिक नेताओं को

भी गीता के सिद्धांतों से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि वे अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और निष्ठा से निभा सकें।

निष्कर्षतः, नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर चुनौती है जिसका सामना आज का समाज कर रहा है। इस संकट की घड़ी में, श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसा दिव्य प्रकाश है जो हमें सही मार्ग दिखा सकती है। इसके शाश्वत सिद्धांत हमें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से नैतिक पतन से लड़ने और एक ऐसे भविष्य का निर्माण करने की शक्ति प्रदान करते हैं जहाँ सत्य, न्याय, और करुणा का बोलबाला हो। गीता का महत्व केवल एक धार्मिक ग्रंथ के रूप में ही नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन के रूप में भी अनमोल है, जो हमें एक सार्थक और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

नेतृत्व और प्रबंधन दो ऐसे महत्वपूर्ण पहलू हैं जो किसी भी संगठन, समुदाय या राष्ट्र की सफलता के लिए अविभाज्य हैं। जहाँ प्रबंधन संसाधनों का कुशल उपयोग और लक्ष्यों की प्राप्ति पर केंद्रित होता है, वहीं नेतृत्व लोगों को एक साझा दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करने और उन्हें उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की कला है। भारतीय दर्शन और ज्ञान के विशाल भंडार में, श्रीमद्भगवद्गीता नेतृत्व और प्रबंधन के सिद्धांतों पर गहरा प्रकाश डालती है। महाभारत के युद्धक्षेत्र में भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश न केवल तात्कालिक परिस्थितियों को संबोधित करते हैं, बल्कि आज के जटिल और गतिशील परिवेश में भी प्रासंगिक और मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

गीता का केंद्रीय संदेश कर्तव्य (धर्म) के पालन पर जोर देता है। एक नेता या प्रबंधक के लिए, इसका अर्थ है अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों को निष्ठा और ईमानदारी से निभाना। कृष्ण अर्जुन को उसके क्षत्रिय धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं, भले ही उसे अपने ही प्रियजनों के विरुद्ध युद्ध करना पड़े। इसी प्रकार, एक प्रभावी नेता को व्यक्तिगत भावनाओं और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर संगठन के सर्वोत्तम हित में निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए। कर्तव्यनिष्ठा एक मजबूत नैतिक आधार प्रदान करती है, जो विश्वास और विश्वसनीयता का निर्माण करती है, नेतृत्व के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण स्तंभ।

गीता कर्मयोग के सिद्धांत पर भी बल देती है, जो फल की आसक्ति के बिना कर्म करने का उपदेश देता है। एक नेता या प्रबंधक को परिणामों के प्रति अत्यधिक लगाव से बचना चाहिए और अपना ध्यान पूरी लगन और समर्पण के साथ अपने कार्यों को करने पर केंद्रित करना चाहिए। जब नेता अपने

व्यक्तिगत लाभ या प्रशंसा की चिंता किए बिना काम करते हैं, तो वे दूसरों के लिए एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करते हैं और टीम के भीतर निष्ठा और सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। यह दृष्टिकोण तनाव और निराशा को कम करने में भी मदद करता है, जिससे अधिक टिकाऊ और प्रभावी नेतृत्व संभव हो पाता है।

गीता में स्थितप्रज्ञता, अर्थात् स्थिर बुद्धि वाले व्यक्ति के गुणों का भी वर्णन किया गया है। एक नेता को सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय जैसे द्वंद्वों से अप्रभावित रहना चाहिए। भावनात्मक स्थिरता कठिन परिस्थितियों में शांत और तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। एक विचलित या भावुक नेता भ्रम और अनिश्चितता पैदा कर सकता है, जबकि एक स्थितप्रज्ञ नेता संकट के समय में भी आशा और दिशा की किरण बनकर उभरता है।

इसके अतिरिक्त, गीता ज्ञानयोग, भक्तियोग और राजयोग जैसे विभिन्न योगों के माध्यम से आत्म-जागरूकता और आत्म-नियंत्रण के महत्व पर जोर देती है। एक प्रभावी नेता को अपनी शक्तियों और कमजोरियों, अपनी प्रेरणाओं और मूल्यों को समझना चाहिए। आत्म-जागरूकता नेताओं को अधिक प्रामाणिक और सहानुभूतिपूर्ण बनने में मदद करती है, जिससे वे अपने अनुयायियों के साथ गहरा संबंध स्थापित कर पाते हैं। आत्म-नियंत्रण उन्हें आवेगपूर्ण व्यवहार से बचने और दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है।

गीता में भगवान कृष्ण एक कुशल मार्गदर्शक और परामर्शदाता के रूप में अर्जुन का मार्गदर्शन करते हैं। उनका संवाद एक प्रभावी नेतृत्व शैली का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो धैर्य, करुणा और स्पष्ट संचार पर आधारित है। कृष्ण अर्जुन की शंकाओं का समाधान करते हैं, उसे प्रेरित करते हैं और उसे उसकी क्षमता का एहसास कराते हैं। इसी प्रकार, एक सफल नेता को अपने टीम के सदस्यों का मार्गदर्शन करने, उन्हें प्रेरित करने और उनके विकास में मदद करने की क्षमता होनी चाहिए। प्रभावी संचार विश्वास और समझ को बढ़ावा देता है, जो एक सामंजस्यपूर्ण और उत्पादक कार्य वातावरण के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का महत्व बहुआयामी है। यह व्यक्तिगत शांति और विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक है, अस्तित्वगत प्रश्नों के उत्तर देती है,

नेतृत्व और प्रबंधन के लिए प्रेरणास्रोत है, और वैश्विक शांति एवं सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आवश्यकता है कि हम गीता के गहन ज्ञान को समझें और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। यह प्राचीन ज्ञान आज भी उतना ही प्रासंगिक और शक्तिशाली है जितना यह हजारों वर्ष पहले था, और यह आने वाली पीढ़ियों का भी मार्गदर्शन करता रहेगा। आज के अशांत और तनावपूर्ण विश्व में श्रीमद्भगवद्गीता का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। यह हमें व्यक्तिगत शांति प्राप्त करने और सामाजिक सद्भाव स्थापित करने का मार्ग दिखाती है। गीता का ज्ञान हमें सिखाता है कि सच्ची शांति हमारे भीतर है और इसे प्राप्त करने के लिए हमें आसक्ति, कामना और अहंकार को त्यागना होगा। यह हमें सभी प्राणियों में एकता का दर्शन कराती है और कर्तव्य पालन, सहनशीलता और परोपकार जैसे गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती है। यदि हम गीता के शाश्वत संदेशों को अपने जीवन में उतारें, तो न केवल हम व्यक्तिगत रूप से शांति और सुख का अनुभव कर सकते हैं, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण भी कर सकते हैं जो शांति, सद्भाव और प्रेम पर आधारित हो। गीता का अध्ययन और मनन आज के समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

गीता 2/47

गीता 18/66

गीता 3/8

श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस गोरखपुर

गीता रहस्य लोकमान्य तिलक, किताबमहल इलाहाबाद

गीता का तात्विक विवेचन- आचार्य भास्करानन्द लोहनी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान

भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा - राममूर्ति पाठक, अभिमन्यू प्रकाशन इलाहाबाद

प्राचीन भारतीय धर्म और दर्शन- डॉ० शिवस्वरूप सहाय, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली